International Journal of Advanced Educational Research
www.themultidisciplinaryjournal.com
ISSN: 2455-6157
Received: 03-05-2025, Accepted: 02-06-2025, Published: 17-06-2025
Volume 10, Issue 1, 2025, Page No. 56-57

सार्क के संदर्भ में भारत की विदेश नीति

डॉ. अमिता मीना
सह आचार्य, राजनीति विज्ञान, गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत

सारांश
भारत की विदेश नीति में क्षेत्रीय सहयोग का विशेष महत्व रहा है, विशेषकर दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) के संदर्भ में। यह शोध–पत्र भारत की विदेश नीति के सिद्धांतों, सार्क की भूमिका, क्षेत्रीय राजनीति, आर्थिक सहयोग, सुरक्षा चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। दक्षिण एशिया विश्व का एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ एक ओर सांस्कृतिक समानता और ऐतिहासिक जुड़ाव है, वहीं दूसरी ओर राजनीतिक मतभेद, सीमाई विवाद और विकास की असमानताएँ भी विद्यमान हैं। इन परिस्थितियों में भारत की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय स्थिरता, आर्थिक विकास और सहयोग को बढ़ावा देना रहा है। सार्क के माध्यम से भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को सुधारने, व्यापार को बढ़ाने और क्षेत्रीय समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया है। हालांकि, भारत–पाकिस्तान तनाव और अन्य राजनीतिक बाधाओं के कारण सार्क अपनी पूर्ण क्षमता तक नहीं पहुँच पाया है। फिर भी, यह संगठन क्षेत्रीय सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बना हुआ है।

मूल शब्द: भारत की विदेश नीति, क्षेत्रीय सहयोग, सार्क (SAARC), दक्षिण एशिया, आर्थिक सहयोग, क्षेत्रीय राजनीति, सुरक्षा चुनौतियाँ, भारत–पाकिस्तान संबंध, क्षेत्रीय स्थिरता, विदेश नीति सिद्धांत

प्रस्तावना
दक्षिण एशिया विश्व के सबसे अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों में से एक है, जहाँ विविध संस्कृतियाँ, भाषाएँ और धर्म पाए जाते हैं। इस क्षेत्र के देशों के बीच ऐतिहासिक रूप से गहरे संबंध रहे हैं, लेकिन औपनिवेशिक इतिहास, विभाजन और राजनीतिक संघर्षों ने इन संबंधों को जटिल बना दिया है। इन परिस्थितियों में क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता को महसूस करते हुए 1985 में सार्क की स्थापना की गई। इसका मुख्य उद्देश्य दक्षिण एशियाई देशों के बीच सहयोग बढ़ाना और विकास को गति देना था। भारत, जो इस क्षेत्र की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और शक्ति है, इस संगठन में केंद्रीय भूमिका निभाता है। भारत की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य न केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना है, बल्कि अपने पड़ोसी देशों के साथ सहयोग और विश्वास को बढ़ावा देना भी है। इसी कारण सार्क भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है।

सार्क का ऐतिहासिक विकास और उद्देश्य
सार्क की स्थापना का विचार सबसे पहले 1980 में बांग्लादेश के राष्ट्रपति जियाउर रहमान ने प्रस्तुत किया था। उन्होंने दक्षिण एशियाई देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक क्षेत्रीय संगठन की आवश्यकता पर बल दिया। इसके बाद कई वर्षों की चर्चा और कूटनीतिक प्रयासों के बाद 1985 में ढाका में सार्क की स्थापना हुई।
सार्क का मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी क्षेत्रों में सहयोग को प्राथमिकता दी गई है। संगठन का यह भी लक्ष्य है कि सदस्य देश मिलकर गरीबी, अशिक्षा और बेरोजगारी जैसी समस्याओं का समाधान करें। हालांकि, सार्क का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि सदस्य देश अपने द्विपक्षीय विवादों को संगठन के मंच पर नहीं उठाएंगे। यह सिद्धांत सहयोग को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया था, लेकिन व्यवहार में यह कई बार बाधा भी बन गया है।

भारत की विदेश नीति के सिद्धांत
भारत की विदेश नीति समय के साथ विकसित हुई है, लेकिन इसके कुछ मूलभूत सिद्धांत हमेशा से बने रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत गुटनिरपेक्षता है। शीत युद्ध के दौरान जब विश्व दो गुटों में बँटा हुआ था, तब भारत ने किसी भी गुट में शामिल होने से इनकार किया और स्वतंत्र नीति अपनाई। इससे भारत को अपनी विदेश नीति में लचीलापन मिला।
दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत पंचशील है, जिसमें शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व, एक–दूसरे की संप्रभुता का सम्मान और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना शामिल है। ये सिद्धांत भारत की कूटनीति की नींव हैं। इसके अलावा, भारत ने "पड़ोसी प्रथम" नीति को अपनाया है, जिसके अंतर्गत वह अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को प्राथमिकता देता है। यह नीति सार्क के संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

सार्क में भारत की भूमिका (Detailed Analysis)
भारत सार्क का सबसे बड़ा और प्रभावशाली सदस्य है। इसकी जनसंख्या, अर्थव्यवस्था और सैन्य शक्ति अन्य सदस्य देशों की तुलना में अधिक है, जिससे इसकी भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत ने सार्क के माध्यम से कई पहल की हैं, जिनमें व्यापार समझौते, विकास परियोजनाएँ और तकनीकी सहयोग शामिल हैं। SAFTA के माध्यम से भारत ने क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देने का प्रयास किया है। इसके अलावा, भारत ने अपने पड़ोसी देशों को आर्थिक सहायता, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सहयोग प्रदान किया है। उदाहरण के लिए, COVID-19 महामारी के दौरान भारत ने वैक्सीन और दवाइयों की आपूर्ति कर क्षेत्रीय सहयोग का परिचय दिया।

आर्थिक आयाम (Economic Dimension)
सार्क के माध्यम से भारत ने क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देने का प्रयास किया है। दक्षिण एशिया में व्यापार की संभावनाएँ बहुत अधिक हैं, लेकिन वर्तमान में यह वैश्विक औसत से कम है।

भारत ने व्यापार बाधाओं को कम करने, निवेश को बढ़ाने और क्षेत्रीय बाजार को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए हैं। ऊर्जा सहयोग, परिवहन नेटवर्क और डिजिटल कनेक्टिविटी जैसे क्षेत्रों में भी सहयोग की संभावनाएँ हैं।

सुरक्षा और राजनीतिक आयाम

दक्षिण एशिया में सुरक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। आतंकवाद, सीमा विवाद और राजनीतिक अस्थिरता क्षेत्रीय सहयोग को प्रभावित करते हैं। भारत ने सार्क के माध्यम से इन समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास किया है, लेकिन द्विपक्षीय विवाद, विशेषकर भारत–पाकिस्तान संबंध, इसमें बाधा बने हुए हैं।

चुनौतियाँ (Critical Analysis)

सार्क की सबसे बड़ी चुनौती भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव है। इसके कारण कई शिखर सम्मेलन रद्द हो चुके हैं। इसके अलावा, सदस्य देशों के बीच विश्वास की कमी, आर्थिक असमानता और राजनीतिक अस्थिरता भी संगठन की प्रगति को प्रभावित करती है।

वर्तमान परिदृश्य और भारत की रणनीति

हाल के वर्षों में सार्क की गतिविधियाँ कम हो गई हैं। भारत ने BIMSTEC और अन्य संगठनों पर ध्यान देना शुरू किया है।
फिर भी, सार्क पूरी तरह अप्रासंगिक नहीं हुआ है और भविष्य में इसकी भूमिका फिर से बढ़ सकती है।

भविष्य की संभावनाएँ (Future Prospects)

सार्क के भविष्य को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग की अपार संभावनाएँ मौजूद हैं। यदि सदस्य देश आपसी मतभेदों को कम करके सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाएँ, तो यह संगठन आर्थिक विकास, व्यापार विस्तार और सामाजिक प्रगति के लिए एक सशक्त मंच बन सकता है। भारत, अपनी आर्थिक और राजनीतिक क्षमता के कारण, इस दिशा में नेतृत्वकारी भूमिका निभा सकता है। डिजिटल कनेक्टिविटी, ऊर्जा सहयोग, जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य क्षेत्र में साझेदारी भविष्य के प्रमुख क्षेत्र हो सकते हैं। कोविड–19 महामारी के दौरान भारत द्वारा क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के प्रयास इस दिशा में एक सकारात्मक संकेत हैं। इसके अतिरिक्त, क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ाने के लिए मुक्त व्यापार समझौतों को प्रभावी रूप से लागू किया जा सकता है, जिससे आर्थिक एकीकरण को बल मिलेगा।
भविष्य में सार्क को अधिक प्रभावी बनाने के लिए संस्थागत सुधार, निर्णय प्रक्रिया में तेजी और राजनीतिक इच्छाशक्ति आवश्यक होगी। यदि भारत अपनी "पड़ोसी प्रथम" नीति के तहत सहयोग को और सुदृढ़ करता है, तो सार्क दक्षिण एशिया में एक सफल क्षेत्रीय संगठन के रूप में उभर सकता है।

निष्कर्ष

दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्थापित दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) ने सदस्य देशों के बीच संवाद, आर्थिक सहयोग और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया है। भारत, जो इस संगठन का सबसे बड़ा और प्रभावशाली सदस्य है, ने अपनी विदेश नीति के माध्यम से सार्क को सशक्त बनाने का निरंतर प्रयास किया है। भारत की विदेश नीति में "पड़ोसी प्रथम" (Neighbourhood First) की अवधारणा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जिसका उद्देश्य क्षेत्रीय स्थिरता, विकास और विश्वास निर्माण को बढ़ावा देना है। हालाँकि, सार्क की कार्यक्षमता कई बार राजनीतिक मतभेदों, विशेषकर भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव के कारण प्रभावित हुई है। इन चुनौतियों के बावजूद, भारत ने द्विपक्षीय और बहुपक्षीय स्तर पर सहयोग को जारी रखा है और क्षेत्रीय विकास परियोजनाओं, मानवीय सहायता तथा व्यापारिक पहलों के माध्यम से अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है।
समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि सार्क भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण आयाम है, जो क्षेत्रीय एकीकरण और सहयोग की दिशा में एक आधार प्रदान करता है। यद्यपि इसकी प्रगति अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाई है, फिर भी यह मंच दक्षिण एशिया में शांति, विकास और सहयोग के लिए एक संभावनाशील माध्यम बना हुआ है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, स्वर्ण. (2018). भारत की विदेश नीति. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
2. मेहता, वी. के. (2017). अंतरराष्ट्रीय संबंध. नई दिल्ली: एस. चाँद प्रकाशन
3. कुमार, दिनेश. (2019). भारत की विदेश नीति और दक्षिण एशिया. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
4. शर्मा, आर. के. (2016). सार्क और क्षेत्रीय सहयोग. जयपुररू रावत पब्लिकेशन।
5. वर्मा, अनिल. (2020). दक्षिण एशिया की राजनीति. नई दिल्ली: दीप एंड दीप प्रकाशन।
6. मिश्रा, एस. सी. (2015). भारत की विदेश नीति का विकास. इलाहाबाद: लोकभारती।
7. गुप्ता, रमेश. (2021). वैश्विक राजनीति और भारत. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
8. तिवारी, संजीव. (2018). अंतरराष्ट्रीय राजनीति के सिद्धांत. भोपाल: हिंदी ग्रंथ अकादमी।
9. चौधरी, कुसुम. (2017). समकालीन विश्व राजनीति. जयपुर: रावत पब्लिकेशन।
10. पंत, हर्ष वी. (2019). भारतीय विदेश नीति. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. जैन, बी. एम. (2016). अंतरराष्ट्रीय संबंध और राजनीति. नई दिल्ली: पीयरसन।
12. सिंह, अजय. (2020). दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
13. जोशी, राजेश. (2021). भारत और सार्क संबंध. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
14. शर्मा, संदीप. (2019). क्षेत्रीय संगठन और वैश्विक राजनीति. नई दिल्ली: दीप एंड दीप।
15. कुमार, विकास. (2018). भारत की विदेश नीतिरू एक अध्ययन. नई दिल्ली: सैज प्रकाशन।